Vol. 10
Issue 1
15 January, 2019
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

डॉ० नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण

बीज शब्द :

नरेन्द्र कोहली, कृष्णसाहित्य, उपन्यास, कृष्ण कथा, स्त्री विमर्श

डॉ. नरेन्द्र कोहली ने अपने उपन्यासों में नारी चरित्रों को सशक्त एवं प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। डॉ. कोहली ने जहाँ एक तरफ सत्यवती जैसी नारी का चित्रण किया जिसने नारी को कामना एवं वासना से युक्त माना और संसार के समस्त भोगों की स्वामिनी होना चाहती है, वहीं द्रौपदी के रूप में एक दृढ़ संकल्पित नारी का भी चित्रण किया है। कुन्ती ने युधिष्ठिर को नारी के बारे में बताया कि नारी पुरुष को दुर्बल व पराजित होते हुए नहीं देखना चाहती बल्कि वह सामर्थ्यवान एवं विजित पुरुष को ही स्वयं के लिए कमनीय मानती है। नारी का एक ऐसा रूप भी इनके उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है कि नारी, पुरुष को धन और वैभव से श्रेष्ठ मानती है। सामर्थ्यवान पुरुष को प्राप्त करने के लिए वह धन, वैभव, पद एवं प्रतिष्ठा का भी त्याग कर सकती है। नारी का एक स्वरूप यह भी चित्रित होता है कि नारी सौन्दर्य की अप्रतिम देवी होते हुए भी अपमान होने पर रौद्र रूप धारण कर विनाशकारिणी बन जाती है।

*****

डॉ. राहुल उठवाल
(पूर्व प्रशिक्षक)
राष्ट्रीय एकता संस्थान, पुणे
आई- 605, वी.वी.आई.पी. एड्रेसिज,
राज नगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद,
E-mail: soonu.uthwal@gmail.com

डॉ० नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण

वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त उच्च थी। उस काल में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की कहावत चरितार्थ होती थी। भारतीयों के सभी आदर्श रूप नारी में पाए जाते थे, जैसे सरस्वती (विद्या का आदर्श), लक्ष्मी (धन का आदर्श), दुर्गा (शक्ति का आदर्श), रति (सौन्दर्य का आदर्श) एवं गंगा (पवित्रता का आदर्श) आदि। उस समय नारी को चौंसठ कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। पत्नी के रूप में वे पतिपरायणा थी। युद्ध क्षेत्र में पति संग शस्त्र-संचालन भी करती थी। रथ की सारथी बनकर मार्गदर्शन भी करती थी। सार्वजनिक क्षेत्रों में स्त्रियां शास्त्रार्थ भी करती थीं। उस काल में पुरुषों का वर्चस्व था, लेकिन नारी को भी सम्मान दिया जाता था।

मध्यकाल में नारियों की स्थिति उत्तरोत्तर गिरती गई। अरबों तथा मुसलमानों के आक्रमणों के कारण उनको सदैव सुरक्षित रखा गया। वे मात्र गृहणी थीं और गृहकार्य में लिप्त थीं। इस काल के अन्त में नारियों की दयनीय स्थिति में बहुत परिवर्तन आया और उन्नीसवीं सदी के आस-पास अनेक समाज सुधारक जैसे राजा राममोहन राय ने नारी पर होने वाले कई अत्याचारों को समाप्त कर उनकी शिक्षा की व्यवस्था की। सती प्रथा का विरोध किया। बंगाल के ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा के पुनर्विवाह के मार्ग खोल दिए। स्वतन्त्रता आन्दोलन में गांधी जी ने भी नारियों को अपनी योग्यता सिद्ध करने का निमन्त्रण दिया था। वर्तमान समय में तो कल्पना चावला, श्रीमती सुनीता विलियम्स ने नए आविष्कार करके निज योग्यता सिद्ध की है। किरण बेदी, बरखा दत्त जैसी नारियां भी सफलता के ज्वलंत उदाहरण हैं। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी शक्तिशाली महिला के रूप में स्मरणीय हैं। राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर श्रीमती प्रतिभा पाटिल अपनी दक्षता का परिचय दिया है। समाज प्रतिपल विकास की ओर गतिमान है।

वर्तमान साहित्य में स्त्री और पुरुष की सामाजिक संरचना पर सवाल खड़ा कर तथा उस पर बहस की मांग करके हिन्दी नवजागरण के स्त्री आंदोलन के अपूर्ण युद्ध को स्थापित रखने, व प्रगति पर पहुँचाने वाले रचनाकारों में हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार व चिंतक, मनीषी डॉ. नरेन्द्र कोहली जी का योगदान अविस्मरणीय रहा है। अनूठी शैली, व नवीन दृष्टिकोण से हिन्दी गद्य साहित्य को एक नया आयाम प्रदान करने वाले कोहली जी ने भारत ही नहीं विश्व साहित्य जगत में अपनी विशुद्ध रचना शैली के कारण अपरिमित ख्याति अर्जित की है। उनकी रचना जितनी गहन और गरिमामयी है, उनका व्यक्तित्व भी उतना ही गंभीर और गौरवपूर्ण रहा है। पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की अनसुलझी पहेली को बहुत ही तार्किकता से सुलझाते हुए उनके माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं एवं उनके समाधान को समाज के सामने प्रस्तुत करना, कोहली जी की अन्यतम विशेषता रही है। उनके कृष्णपरक उपन्यासों में व्यक्त की गयी नारी संबंधी दृष्टि को हम निम्न प्रकार से देख सकतें हैं।

कृष्णपरक उपन्यासों में नारी सम्बन्धी दृष्टिकोणः

कोहली जी ने नारी को गरिमामय् दृष्टि से देखा है, कृष्णपरक उपन्यासों में जिन पात्रों ने नारी को अपमानित किया, उसका सम्मान नहीं किया और नारी को केवल भोग्या समझा वह पात्र समय से पूर्व ही काल के गाल में समा गये।

कोहली जी ने नारी के भीतर आशा, विश्वास, क्षमा, श्रद्धा, कल्याण भावना, त्याग, संकल्प, मानवता एवं सौन्दर्य का दर्शन कराया है, कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों में अनेक नारी पात्रों का वर्णन मिलता हैं। इनमें कुछ पात्र उदात्तता त्याग एवं समर्पण की भावना से समन्वित हैं, तो कुछ पात्र स्वार्थपरता एवं दुर्बलता लिये हुये भी हैं तथा अनेक आदर्श नारी पात्र महान आदर्शों एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं। आदर्श नारी पात्रों में गंगा, अम्बिका, अम्बालिका, कुन्ती, माद्री, द्रौपदी, सुभद्रा, सत्यभामा, रुकमणि, यशोदा, देवकी व पारंसवी आदि हैं।

कोहली जी कहते हैं कि नारी स्वार्थपरता, माया और लालसा की प्रतिमूर्ति है वह हर एक वस्तु पर अपना अधिकार समझती है, जब शान्तनु सत्यवती से कहते हैं- ''मैंने सुना है - स्त्री दया, ममता, करुणा और उदारता की मूर्ति होती है।''[1] तब सत्यवती क्रोधित होते हुये कहती है- ''मैं वैसी नारी नहीं हूँ। न आदर्श पालने की मेरी कोई इच्छा है जिससे बाँधकर मुझे मूर्ख बनाया जा सके'' सत्यवती बोली आपने यह भी सुना होगा कि नारी वासना भी है और माया भी। उसमें इच्छाएँ होती हैं, वह पृथ्वी के मृण्मय तत्त्वों से बनी है, इसलिये उसमें भोग और भोग के अधिकार की लालसा होती है। वह पृथ्वी के समान, प्रत्येक वस्तु पर अपना अधिकार चाहती है। धन, वैभव, सत्ता- सबकी माया व्यापती है मुझे।''[2] सत्यवती ऐसी नारी है जिसमें स्वार्थ ही स्वार्थ भरा पड़ा है वह कहती है - भीष्म जैसे सामर्थ्यवान व्यक्ति का पूरा उपयोग करना चाहिए। वह अपने मन में स्वार्थपरता पूर्ण योजना बनाती है कि ''भीष्म की भुजाएँ साम्राज्य की रक्षा करें और साम्राज्य भोग करे विचित्रवीर्य, प्रजा का पालन करें भीष्म, और उसका स्वामी हो विचित्र वीर्य.....भीष्म को धाय बना दिया

जाये जिसे माता के दायित्त्व तो निभाने पड़े। अधिकार उसे एक भी न हो।.....''[3] अम्बा भी केवल अपने विषय में सोचती है वह भीष्म की कामानुरागनी है यदि उसे स्वीकार नहीं किया जायेगा तो जैसे वह संसार को ध्वस्त कर देगी। ''अम्बा ने निर्द्वन्द्व स्वर में कहा, भीष्म मेरा है। हस्तिनापुर का राज्य मेरा है। उससे कम मुझे कुछ भी स्वीकार्य नहीं।''[4]

भीष्म न मिल सका तो वह भयंकर प्रतिज्ञा करती है-''मैं अपना जीवन तपस्या में दग्ध कर दूँगी, ताकि तुम्हारा जीवन, जो मेरा नहीं हो सका, नष्ट हो सके।.....''[6]

कोहली जी कहते हैं कि, नारी मन के किसी कोने में प्रेम, दया, ममता, त्याग आदि के साथ-साथ ईर्ष्या जैसी निष्कृटता भी पायी जाती हैं, जो अवसर पाकर धधक उठती हैं। उससे अधिक यदि किसी को प्राप्त हो जाये तो वह ईर्ष्या से जल उठती है, जब परिचारिका ने दुर्योधन के जन्म के समय बालक को नन्हें महाराज कहा तो गान्धारी के मन में कुन्ती के लिये ईर्ष्या धधक उठी - ''परिचारिका की वाणी एक ओर गान्धारी को सुख दे रही थी और दूसरी ओर वह जैसे हृदय को चीरती जा रही थी..... ..नन्हें महाराज!.....क्या उसका पुत्र हस्तिनापुर का राजा हो पायेगा? कुन्ती के पुत्र का समाचार पा कर ईर्ष्या की अग्नि धधक उठी थी, उसके मन में।''[6]

जब भीम द्रौपदी के लिये सौगंधिक पदम् लेने चला जाता है तो युधिष्ठिर ने उसे भोजन के समय भी नहीं देखा तब वह द्रौपदी से पूछते हैं; तो वह कहती है वह मेरे लिये अनेक सौगंधिक पद्म लेने गये हैं; यह सुनकर युधिष्ठिर के मन में द्रौपदी के प्रति कुछ कठोरता का भाव उदित हो उठता है .....इतनी समझदार और पंडिता होकर भी वह स्थितियों को नहीं समझती.....क्यों वह अति साधारण नारियों के समान, साधारण सी श्रृंगार-सामग्री के लिये भी लालायित हो उठती है उसी समय युधिष्ठिर को विवाह के ठीक पहले माता कुन्ती द्वारा दी गयी चेतावनी स्मरण हो आती है- ''स्त्री, प्रकृति रूपा है। वह अपने रूप और अलंकरण का प्रदर्शन भी करेगी और उस पर मुग्ध भी होगी.....उसके पास स्वर्ण के सहस्रों आभूषण होगें, तो भी वह एक पुष्प का मोह त्याग नहीं पायेगी''[7]

नारी मन को संघर्षशील पुरुष प्रिय लगता है; मनभावन लगता है। यह नारी प्रकृति है- इसलिये कुन्ती युधिष्ठिर से कहती हैं -''राज्य अर्जित करो। जीवन से जूझो। नारी को मात्र अपने पुरुष का अर्जन प्रिय होता है, विसर्जन नहीं। नारी को जीवन से जूझता पुरुष कामनीय लगता है, उससे भयभीत होता अथवा उसकी उपेक्षा करता नहीं। .....नारी अपने पुरुष को न असमर्थ देखना चाहती है; न पराजित, न दुर्बल।.....नारी को समझो पुत्र! पंचाली को तुम्हारी समृद्धि से प्रसन्नता होगी। उसे वस्त्र आभूषण, सम्पत्ति, समृद्धि और सत्ता प्रिय होगी पुत्र।''[8]

भारतीय जीवन-मूल्य में नारी का धर्म उसके पति के साथ ही होता है। द्रौपदी अपने आप को सदा समझाती रहती है -''पत्नी का धर्म तो पति के साथ विकसित होता है वही उसका भोग भी है वही उसका त्याग भी। वही उसका काम भी है, उसका वैराग्य भी.....।''[9]

नारी का सम्बन्ध उसके पति के सम्बन्ध के साथ परिचालित होता है। पति का मित्र उसका मित्र होता है- परन्तु पति का शत्रु पत्नी का भी शत्रु होता है। जब भीम हिडिंबा को फटकारता है कि तू तो तिरस्कार योग्य है तेरा काम-वेग तेरे किसी सम्बन्ध को नहीं जानता है, जिसने तेरे भाई का वध किया उसी से तू विवाह करना चाहती है तब हिंडिबा कहती है - ''स्त्री जिससे प्रेम करती है, उसके मित्रों को अपना मित्र और उसके शत्रुओं को अपना शत्रु समझती है। पत्नी के सम्बन्ध उसके पति के सम्बन्धों से ही तो निर्धारित होते हैं।''[10]

एक आदर्श नारी धन और वैभव के लिये अपने पति को त्याग कर, किसी दूसरे पुरुष को स्वीकार नहीं करती चाहे वह कितना वैभवशाली क्यों न हो - जब कीचक सैरंधी से अपने पतियों को त्यागकर उसे स्वीकार कर लेने की बात करता है तो वह कहती है- ''तुम किसी और की पत्नी को कैसे यह उपदेश दे रहे हो कि वह अपने पति को त्याग कर तुम्हें स्वीकार कर ले क्योंकि तुम उसे कुछ अधिक सांसारिक सुख देने में समर्थ हो। आर्य सेनापति! संसार बल और सत्ता से नहीं चलता है। यह धर्म से चलता है और नारी का ही नहीं पुरुष का भी धर्म यही है कि वह अपनी स्त्री के प्रति निष्ठावान रहे। मेरे पति जैसे भी हैं, मैं उनके प्रति निष्ठावान हूँ।''[11]

कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में नारी के सौंदर्य का भी वर्णन किया है! सम्पूर्ण संसार में नारी सौन्दर्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है। अनेक लेखकों और कवियों ने इस मूल्य को लिखा है, गाया है व चित्रकारी की है। पुरुष मन नारी सौन्दर्य की ओर खिंचा चला जाता है। नारी के लिये उसका सौन्दर्य संसार को विजय करने की क्षमता रखता है। नारी सौन्दर्य के सामने पुरुष के समस्त आदर्श मूल्य मादक पदार्थ पीकर सो जाते हैं जब स्वयंवर मण्डप में प्रथम बार भीम द्रौपदी को देखता है तो उसकी दृष्टि द्रौपदी के सौन्दर्य पर अटक जाती है-''आरम्भ

में भीम के चारों ओर अनेक आकर्षक आकृतियाँ, विविध रोचक प्रसंग तथा विभिन्न आमंत्रणकारी दृश्य थे, किन्तु पांचाली को देखने के पश्चात् समस्त चेतना आकर, उसी पर केंद्रित हो गयी थी। .....आज उसे पहली बार अनुभव हुआ था कि सारी सृष्टि में पुरुष के लिये नारी से बढ़कर सुन्दर, आकर्षक तथा मनमोहक और कुछ भी नहीं है...''[12]

अर्जुन जब पहली बार द्रौपदी को देखता है तो उसकी शिराओं और धमनियों में लहू, वेग के समान दौड़ने लगता है –''अर्जुन ने पहली बार उसे इतने निकट से देखा था। उसकी शिराओं में मद लहराया.....कृष्णा ने अर्जुन की ग्रीवा में जयमाला डाली तो अर्जुन ने उसे पुनः देखा यह रूप सचमुच अद्वितीय था, कमनीय था, किसी भी पुरुष के मन में कामना जगा सकता था।..... बड़ी-बड़ी श्याम आंखे, जैसे खिले हुये दो कमल दल हों। केश काले और घुँघराले। उभरे हुये लाल रंग के नख। सुन्दर भौंहे, मनोहर और स्थूल उरोज.....उसके अंगों में से नील कमल की सी गंध आ रही थी। .....''[13] .....अर्जुन को लगा वह मात्र संसार की अद्वितीय सुन्दरी ही नहीं थी वह पाण्डवों की प्राणदायिनी देवी भी थी। वह उनकी मुक्तिदायिनी भी थी।''[14]

नारी का नैसर्गिक सौंदर्य बहुत मोहक होता है अर्जुन जब सुभद्रा को देखता है तो यही सोचता है– ''यह तरुणी तो सचमुच अद्भुत् थी उसका सारथ्य कौशल ही नहीं उसका रूप भी आकर्षक था। वहाँ उपस्थित अन्य स्त्रियों के समान उसका प्रसाधन और शृंगार रेखांकित नहीं था, उसका तेज अधिक मनोरम था। उसका वेश मांगलिक अवसरों के अनुकूल तो था, किन्तु यह भी स्पष्ट था कि उसने समारोह के लिये अपना शृंगार नहीं किया था। उसका नैसर्गिक रूप ही इतना मोहक था कि.....''[15]

द्रौपदी का सौन्दर्य आलौकिक था जिसे देखकर रानी सुदेष्णा भी स्तब्ध रह गयी; ''यह सैरंधी तो जैसे उल्का थी। उसकी दंत-पंक्ति देखकर किसी का भी हृदय पिघलकर बूँद-बूँद वह जायेगा; और यदि कहीं वह पुरुष हृदय हुआ तो उसका स्पंदित होना ही कठिन था। सैरंधी की मुस्कान थी या शरद् पूर्णिमा की उजास।.....रानी ने पहली बार उसके अधरों को ध्यान से देखा था.....कामदेव का पुष्प धनुष ही साक्षात् प्रकट हो गया था .....प्रकट क्या हो गया था, सामने खड़े व्यक्ति के हृदय को अपनी प्रत्यंचा में फँसाकर अपनी ओर खींचने लगता था। ''[16]

समाज में किसी के लिये भी नारी का अपमान असहनीय है, जो व्यक्ति नारी का अपमान करता है वह शीघ्र ही काल के गाल में समा जाता है जब भरी सभा में शिशुपाल रुक्मणि का अपमान करता है तब कृष्ण क्रोध में भरकर कहते हैं – ''कृष्ण की आँखों में क्रोध झलका,'' ''अपना अपमान, मैं सहन कर सकता हूँ, किन्तु किसी भरी सभा में, मैं किसी नारी का अपमान नहीं होने दूँगा।''[17] .....उन्होंने शान्त भाव से केवल अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया.....उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र कहाँ से प्रकट कर लिया? इस सभा में उपस्थित लोगों ने देखा था कि उनकी तर्जनी पर सुदर्शन चक्र चमक रहा था। शिशुपाल के पग थम गये उसकी आँखों में भय झलका और उसने जैसे घबरा कर कृष्ण पर प्रहार किया.....किन्तु सुदर्शन चक्र उससे पहले चल चुका था, शिशुपाल का मस्तक कटकर भूमि पर जा गिरा था। उसके रुंड से रक्त फूटा और फर्श पर फैल गया .....।''[18]

आदर्श और धर्मात्मा पुरुष नारी को कभी अपमानित नहीं होने देता, जब गंधर्वराज चित्रसेन कुरु कुल की रानियों को बंदी बना लेता है, तो यह समाचार भीम के लिये बहुत सुखद होता है, परन्तु इसके विपरीत अर्जुन कहता है– ''बे बंदिनी स्त्रियाँ साधारण स्त्रियाँ हैं योद्धा नहीं। उनकी रक्षा तो मानवीय दृष्टि में होनी ही चाहिए। यह दण्ड उनके व्यक्तिगत व्यवहार के लिये नहीं है, उनके स्त्री होने मात्र के लिये है, यह नारीत्व का अपमान है।''[19]

ऐसे में, अर्जुन चित्रसेन से कहता है– ''व्यक्ति का अपमान पृथक बात है; किन्तु नारीत्व का अपमान भयंकर अपराध है, पाप है''[20]

''.....नारी का अपमान करने पर माता गांधारी ने महाराज धृतराष्ट्र को परामर्श दिया था कि वे अपने परम प्रिय पुत्र का त्याग कर दें।''[21] ''.....स्त्रियों को कोई सेना अपने शस्त्र बल के आधार पर बांधकर ले जाये – यह धर्म नहीं है और किसी स्त्री को इस आधार पर बंदी बनाना कि वह हमारे शत्रु की पत्नी है, सर्वथा धर्म विरुद्ध है अशोभनीय कृत्य है।''[22]

नारी का प्रतिशोध भंयकर होता है वह मुख से उसका उच्चारण नहीं करती वरन् उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह सम्पूर्ण संसार को भस्म कर देना चाहती है। अपने सभी शत्रुओं का नाश चाहती है। सर्वनाश, जब धृष्टद्युम्न द्रौपदी से कहता है कि क्या तुम्हारे मन में प्रतिशोध का भाव नहीं है, तो द्रौपदी क्रोधित होकर कहती है– ''ये केश मैंने शृंगार अथवा प्रसाधन की दृष्टि से मुक्त नहीं छोड़े। ये दुःशासन के रक्त से स्नान करने की प्रतिज्ञा में खुले हैं ....।'' द्रौपदी आगे कहती है ''.....मेरे मन में इतनी भंयकर प्रतिहिंसा जागती है कि इच्छा होती है, सारी सृष्टि को

जलाकर क्षार कर दूँ .....''[23]

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में नारी स्वतन्त्रता, नारी स्वार्थ, नारी महत्त्वकांक्षा, नारी ईर्ष्या, नारी संघर्ष, नारी प्रकृति गुण, नारी कामना, नारी सौन्दर्य, नारी सर्व विजेता, नारी प्रेम, नारी की कर्त्तव्यनिष्ठा, नारी ममता, माया, नारी गौरव, नारी तेज, नारी स्वाभिमान, नारी सम्मान तथा नारी प्रतिशोध आदि को अपनी लेखनी रूपी तूलिका से चित्रित किया, जो नारी के सभी गुणों-अवगुणों का वर्णन करते हैं।

संदर्भ

1. महासमर - 1 बन्धन - डॉ0 नरेन्द्र कोहली पृ0 81
2. वही पृ0 81
3. वही पृ0 175
4. वही पृ0 215
5. वही पृ0 17
6. वही पृ0 435
7. वही 5 अन्तराल वही पृ0 274
8. वही 3 कर्म वही पृ0 370-71
9. वही 5 अन्तराल वही पृ0 255
10. वही 3 कर्म वही पृ0 149
11. वही 6 प्रच्छन्न वही पृ0 429
12. वही 6 प्रच्छन्न वही पृ0 429
13. वही 3 कर्म वही पृ0 301
14. वही 1 बन्धन वही पृ0 306
15. वही 4 धर्म वही पृ0 160
16. वही 6 प्रच्छन्न वही पृ0 389
17. वही 4 धर्म वही पृ0 333
18. वही वही पृ0 333
19. वही 6 प्रच्छन्न वही पृ0 82
20. वही पृ0 90
21. वही पृ0 94
22. वही पृ0 89
23. वही पृ0 91

◆◆◆

पृष्ठ 68 का शेष **श्रीमद्भगवद्गीताः शिक्षा का उद्देश्य मानवीयता का.....**

संदर्भः

1. शिक्षा के सिद्धान्त, विजेन्द्र कुमार वशिष्ठ, पृष्ठ 14 ।
2. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, डॉ सरोज सक्सेना, पृष्ठ 53 ।
3. द्रष्टव्य, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, डॉ सरोज सक्सेना, पृष्ठ 69 ।
4. श्रीमद्भगवद्गीता, श्री राजगोपालाचार्य, पृष्ठ 78 ।
5. श्रीमद्भागवद्गीता, श्री राजगोपालाचार्य, पृष्ठ 79 ।
6. शिक्षा के तात्त्विक सिद्धान्त, पृष्ठ 14 ।
7. श्रीमद्भगवद्गीता, जीवन-विज्ञान, धर्मेन्द्र मोहन सिन्हा, पृष्ठ 178 ।
8. श्रीमद्भगवद्गीता, जीवन-विज्ञान, धर्मेन्द्र मोहन सिन्हा, पृष्ठ 179 ।
9. श्रीमद्भगवद्गीता, जीवन-विज्ञान, धर्मेन्द्र मोहन सिन्हा, पृष्ठ 178 ।
10. श्रीमद्भागवद्गीता, 2/60 ।
11. श्रीमद्भागवद्गीता, श्री राजगोपालाचार्य, पृष्ठ 79 ।
12. श्रीमद्भागवद्गीता 6/4 ।
13. श्रीमद्भगवद्गीता, जीवन-विज्ञान, धर्मेन्द्र मोहन सिन्हा, पृष्ठ 175 ।

◆◆◆

पृष्ठ 61 का शेष **महाकवि शचीन्द्र भटनागर और.....**

15. वही, पृ॰-25
16. वही, पृ॰-37
17. वही, पृ॰-37
18. वही, पृ॰-39
19. वही, पृ॰-39
20. वही, पृ॰-39
21. वही, पृ॰-26
22. वही, पृ॰-27
23. वही, पृ॰-29
24. वही, पृ॰-34-35
25. वही, पृ॰-35
26. वही, पृ॰-43
27. वही, पृ॰-48
28. वही, पृ॰-11

◆◆◆